Ghusl Ke Zaruri Masaail (Hindi)

अमीरे अहले सुन्नत ﷺ की किताब "नेकी की दा'वत" से लिये गए मवाद की छटी क़िस्त

सफ़हात 17

ग़ुस्ल के ज़रूरी मसाइल

- W.C. का रुख़ दुरुस्त कीजिये 05
- बारिश में नहाना 06
- जंगल में मस्जिद 08
- बेहतरीन आदमी की ख़ुसूसिय्यात 11
- सास बहू में सुल्ह का राज़ 15

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دامت برکاتہم العالیہ

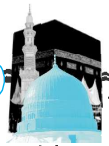

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعٰلَمِیۡنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الۡمُرۡسَلِیۡنَ
اَمَّا بَعۡدُ فَاَعُوۡذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیۡطٰنِ الرَّجِیۡمِ ؕ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ؕ

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتۡ بَرَکَاتُہُمُ الۡعَالِیَہ

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنۡ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ़ येह है :

اَللّٰھُمَّ افۡتَحۡ عَلَیۡنَا حِکۡمَتَکَ وَانۡشُرۡ
عَلَیۡنَا رَحۡمَتَکَ یَا ذَاالۡجَلَالِ وَالۡاِکۡرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (اَلْمُستطرف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکر بیروت)

तालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

गुस्ल के ज़रूरी मसाइल

येह रिसाला **(गुस्ल के ज़रूरी मसाइल)**

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتۡ بَرَکَاتُہُمُ الۡعَالِیَہ ने **उर्दू** ज़बान में तह़रीर फ़रमाया है।

ट्रान्सलेशन डीपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और मक्तबतुल मदीना से शाएअ़ करवाया है। इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो ट्रान्सलेशन डीपार्टमेन्ट को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, ईमेल या SMS) मुत्तलअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : ट्रान्सलेशन डीपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)
मक्तबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,
तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद-1, गुजरात
MO. 98987 32611 • Email : hind.printing92@gmail.com

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

येह मज़्मून ''नेकी की दा'वत'' के सफ़ह़ा 137 ता 155 से लिया गया है।

गुस्ल के ज़रूरी मसाइल

दुआए अ़त्तार

या **अल्लाह** पाक ! जो कोई 16 सफ़ह़ात का रिसाला : ''**गुस्ल के ज़रूरी मसाइल**'' पढ़ या सुन ले उस को ज़ाहिरी व बात़िनी तमाम गन्दगियों से पाक फ़रमा।

اٰمِيْن بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْن صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब दानाए ग़ुयूब صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने तक़र्रुब निशान है : बेशक बरोज़े क़ियामत लोगों में से मेरे क़रीब तर वोह होगा जो मुझ पर सब से ज़ियादा दुरूद भेजे। (ترمذی ج۲ ص۲۷ حدیث ٤٨٤)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! एक 70 सालह इस्लामी भाई मदनी क़ाफ़िले वालों के मदनी ह़ल्क़े में शरीक हुए तो उन्हें गुस्ल के फ़राइज़ का पहली बार पता चला, इसी त़रह़ न जाने कितने मुसल्मान ऐसे होंगे जो येह अह़काम नहीं जानते होंगे। लिहाज़ा इस ज़िम्न में **नेकी की दा'वत** का सवाब लूटने की निय्यत से गुस्ल का त़रीक़ा (ह़नफ़ी) पेश करता हूं, चुनान्चे **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक्तबतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 384 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, **''नमाज़ के अह़काम''** सफ़ह़ा 84 पर से शुरूअ़ होने वाले मज़्मून से ज़रूरतन रद्दो बदल करते हुए अ़र्ज़ है : निय्यत के बिग़ैर भी गुस्ल हो जाएगा मगर सवाब नहीं मिलेगा, इस लिये **बिग़ैर** ज़बान हिलाए दिल में इस त़रह़

www.dawateislami.net

निय्यत कीजिये कि "मैं पाकी ह़ासिल करने के लिये ग़ुस्ल करता हूं।" पहले दोनों हाथ पहुंचों तक तीन तीन बार धोइये, फिर इस्तिन्जे की जगह धोइये ख़्वाह नजासत हो या न हो, फिर जिस्म पर अगर कहीं नजासत हो तो उस को दूर कीजिये फिर नमाज़ का सा वुज़ू कीजिये मगर पाउं न धोइये, **हां** अगर चौकी वग़ैरा पर ग़ुस्ल कर रहे हैं तो पाउं भी धो लीजिये, फिर बदन पर तेल की त़रह़ पानी चुपड़ लीजिये, ख़ुसूसन सर्दियों में (इस दौरान साबुन भी लगा सकते हैं) फिर तीन बार सीधे कन्धे पर पानी बहाइये, फिर तीन बार उलटे कन्धे पर, फिर सर पर और तमाम बदन पर तीन बार, फिर ग़ुस्ल की जगह से अलग हो जाइये, अगर वुज़ू करने में पाउं नहीं धोए थे तो अब धो लीजिये। नहाने में क़िब्ला रुख़ न हों, तमाम बदन पर हाथ फैर कर मल कर नहाइये। ऐसी जगह नहाना चाहिये जहां किसी की नज़र न पड़े अगर येह मुम्किन न हो तो मर्द अपना सत्र (नाफ़ से ले कर दोनों घुटनों समेत) किसी मोटे कपड़े से छुपा ले, मोटा कपड़ा न हो तो ह़स्बे ज़रूरत दो या तीन कपड़े लपेट ले क्यूं कि बारीक कपड़ा होगा तो पानी से बदन पर चिपक जाएगा और مَعَاذَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ घुटनों या रानों वग़ैरा की रंगत ज़ाहिर होगी, औरत को तो और भी ज़ियादा एह़तियात़ की ह़ाजत है। दौराने ग़ुस्ल किसी क़िस्म की गुफ़्तगू मत कीजिये, कोई दुआ भी न पढ़िये, नहाने के बा'द तोलिये वग़ैरा से बदन पोंछने में ह़रज नहीं। नहाने के बा'द फ़ौरन कपड़े पहन लीजिये। अगर मक्रूह वक़्त न हो तो दो रक्अ़त नफ़्ल अदा करना **मुस्तह़ब** है।

(**عالمگیری ج۱ص۱۴**, माख़ूज़न बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 319 वग़ैरा)

ग़ुस्ल के तीन फ़राइज़

﴿1﴾ कुल्ली करना ﴿2﴾ नाक में पानी चढ़ाना ﴿3﴾ तमाम ज़ाहिर बदन पर पानी बहाना।

(فتاوٰی عالمگیری ج۱ص۱۳)

www.dawateislami.net

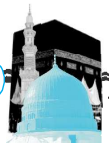

﴾1﴿ कुल्ली करना

मुंह में थोड़ा सा पानी ले कर पच कर के डाल देने का नाम कुल्ली नहीं बल्कि मुंह के हर पुर्ज़े, गोशे, होंट से हल्क़ की जड़ तक हर जगह पानी बह जाए। **इसी** त़रह़ दाढ़ों के पीछे गालों की तह में, दांतों की खिड़कियों और जड़ों और ज़बान की हर करवट पर बल्कि हल्क़ के कनारे तक पानी बहे। रोज़ा न हो तो ग़रग़रा भी कर लीजिये कि सुन्नत है। दांतों में छालिया के दाने या बोटी के रेशे वग़ैरा हों तो उन को छुड़ाना ज़रूरी है। हां अगर छुड़ाने में ज़रर (या'नी नुक़्सान) का अन्देशा हो तो मुआ़फ़ है, गुस्ल से क़ब्ल दांतों में रेशे वग़ैरा महसूस न हुए और रह गए नमाज़ भी पढ़ ली बा'द को मा'लूम होने पर छुड़ा कर पानी बहाना **फ़र्ज़** है, पहले जो नमाज़ पढ़ी थी वोह हो गई। जो हिलता दांत मसाले से जमाया गया या तार से बांधा गया और तार या मसाले के नीचे पानी न पहुंचता हो तो मुआ़फ़ है। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 316, फ़तावा रज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 1, स. 439, 440) जिस त़रह़ की एक कुल्ली गुस्ल के लिये फ़र्ज़ है इसी त़रह़ की तीन कुल्लियां वुज़ू के लिये सुन्नत हैं।

﴾2﴿ नाक में पानी चढ़ाना

जल्दी जल्दी नाक की नोक पर पानी लगा लेने से काम नहीं चलेगा बल्कि जहां तक नर्म जगह है या'नी सख़्त हड्डी के शुरूअ़ तक धुलना लाज़िमी है। और येह यूं हो सकेगा कि पानी को सूंघ कर ऊपर खींचिये। येह ख़याल रखिये कि बाल बराबर भी जगह धुलने से न रह जाए वरना गुस्ल न होगा। नाक के अन्दर अगर रींठ सूख गई है तो इस का छुड़ाना फ़र्ज़ है, नीज़ नाक के बालों का धोना भी फ़र्ज़ है। (ऐज़न, स. 442, 443)

﴾3﴿ तमाम ज़ाहिरी बदन पर पानी बहाना

सर के बालों से ले कर पाउं के तल्वों तक जिस्म के हर पुर्ज़े और हर हर

www.dawateislami.net

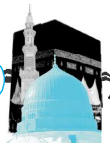

रूंगटे पर (कम अज़ कम दो दो क़त़रे) पानी बह जाना ज़रूरी है, जिस्म की बा'ज़ जगहें ऐसी हैं कि अगर एह़तियात़ न की तो वोह सूखी रह जाएंगी और ग़ुस्ल न होगा। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 317) वुज़ू व ग़ुस्ल और नमाज़, नमाज़े जुमुआ़, क़ज़ा नमाज़, सफ़र की नमाज़, नमाज़े जनाज़ा वग़ैरा के **मुतअ़ल्लिक़** ज़रूरी अह़काम जानने के लिये **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक्तबतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 384 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, **''नमाज़ के अह़काम''** का मुत़ालआ़ फ़रमाइये।

बहते पानी में ग़ुस्ल का त़रीक़ा : **अगर** बहते पानी मसलन दरिया, या नह्र में नहाया तो थोड़ी देर उस में रुकने से तीन बार धोने, तरतीब और वुज़ू येह सब सुन्नतें अदा हो गईं। इस की भी ज़रूरत नहीं कि आ'ज़ा को तीन बार ह़रकत दे। अगर तालाब वग़ैरा ठहरे पानी में नहाया तो आ'ज़ा को तीन बार ह़रकत देने या जगह बदलने से **तस्लीस** या'नी तीन बार धोने की सुन्नत अदा हो जाएगी। बरसात में (नल या फ़व्वारे के नीचे) खड़ा होना बहते पानी में खड़े होने के हुक्म में है। बहते पानी में वुज़ू किया तो वोही थोड़ी देर उस में उ़ज़्व को रहने देना और ठहरे पानी में ह़रकत देना तीन बार धोने के क़ाइम मक़ाम है। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 320) वुज़ू और ग़ुस्ल की इन तमाम सूरतों में कुल्ली करना और नाक में पानी चढ़ाना होगा।

फ़व्वारा जारी पानी के हुक्म में है : **फ़तावा** अहले सुन्नत (ग़ैर मत़्बूआ़) में है : फ़व्वारे (या नल की धार) के नीचे ग़ुस्ल करना जारी पानी में ग़ुस्ल करने के हुक्म में है लिहाज़ा इस के नीचे ग़ुस्ल करते हुए वुज़ू और ग़ुस्ल करते वक़्त की मुद्दत तक ठहरा तो तस्लीस (या'नी तीन बार धोने) की सुन्नत अदा हो जाएगी। चुनान्चे **''दुर्रे मुख़्तार''** में है : अगर जारी पानी या बड़े ह़ौज़

www.dawateislami.net

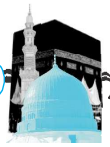

या बारिश में वुज़ू और ग़ुस्ल करने के वक़्त की मुद्दत तक ठहरा तो उस ने पूरी सुन्नत अदा की। (دُرِّمُختار ج ۱ ص ۳۲۰) याद रहे ! ग़ुस्ल या वुज़ू में कुल्ली करना और नाक में पानी चढ़ाना है।

फ़व्वारे की एह़तियातें : **अगर** आप के ह़म्माम में फ़व्वारा (SHOWER) हो तो उसे अच्छी त़रह़ देख लीजिये कि उस की त़रफ़ मुंह कर के नंगे नहाने में मुंह या पीठ क़िब्ले शरीफ़ की त़रफ़ तो नहीं हो रही ! इस्तिन्जा ख़ाने में भी इस की एह़तियात़ फ़रमाइये। क़िब्ले की त़रफ़ मुंह या पीठ होने का मा'ना येह है कि 45 दरजे के ज़ाविये के अन्दर अन्दर हो। लिहाज़ा येह एह़तियात़ भी ज़रूरी है कि 45 डिग्री के ज़ाविये (एंगल, ANGLE) के बाहर हो। इस मस्अले से अक्सर लोग ना वाक़िफ़ हैं।

W.C. का रुख़ दुरुस्त कीजिये : **मेहरबानी** फ़रमा कर अपने घर वग़ैरा के डब्लयू.सी (W.C.) और फ़व्वारे का रुख़ अगर ग़लत़ हो तो उस की इस्लाह़ फ़रमा लीजिये। **ज़ियादा** एह़तियात़ इस में है कि W.C. क़िब्ले से 90 के दरजे पर या'नी नमाज़ पढ़ने में सलाम फैरने के रुख़ कर दीजिये। मि'मार उ़मूमन ता'मीराती सहूलत और ख़ूब सूरती का लिहाज़ करते हैं आदाबे क़िब्ला की परवाह नहीं करते। मुसल्मानों को मकान की ग़ैर वाजिबी बेहतरी के बजाए आख़िरत की ह़क़ीक़ी बेहतरी पर नज़र रखनी चाहिये।

कुछ नेकियां कमा ले जल्द आख़िरत बना ले
भाई नहीं भरोसा है कोई ज़िन्दगी का

(वसाइले बख़्शिश, स. 185)

कब कब ग़ुस्ल करना सुन्नत है : **जुमुआ़,** ईदुल फ़ित्र, बक़र ईद, अ़रफ़े के दिन (या'नी 9 **ज़ुल ह़िज्जतिल ह़राम**) और एह़राम बांधते वक़्त नहाना सुन्नत है। (فتاوٰی عالمگیری ج ۱ ص ۱۶)

www.dawateislami.net

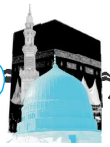

बारिश में ग़ुस्ल : **लोगों** के सामने सित्र खोल कर नहाना ह़राम है। (फ़तावा रज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 3, स. 306) बारिश वग़ैरा में भी नहाएं तो पाजामा या शलवार के ऊपर मज़ीद रंगीन मोटी चादर लपेट लीजिये ताकि पाजामा पानी से चिपक भी जाए तो रानों वग़ैरा की रंगत ज़ाहिर न हो।

तंग लिबास वाले की त़रफ़ नज़र करना कैसा ? : **ज़ोर** से हवा चलने के सबब या बारिश या साह़िले समुन्दर या नह्र वग़ैरा में कोई अगर्चे मोटे कपड़े में नहाए और कपड़ा इस त़रह़ चिपक जाए कि सत्र के किसी कामिल उ़ज़्व मसलन रान की मुकम्मल गोलाई की हैअत (उभार) ज़ाहिर हो जाए ऐसी सूरत में उस (मख़्सूस) उ़ज़्व की त़रफ़ दूसरे को नज़र करने की इजाज़त नहीं। येही हुक्म तंग लिबास वाले के सित्र के उभरे हुए उ़ज़्वे कामिल की त़रफ़ नज़र करने का है।

नंगे नहाते वक़्त ख़ूब एह़तियात़ : **ह़म्माम** में तन्हा नंगे नहाएं या ऐसा पाजामा पहन कर नहाएं कि उस के चिपक जाने से रानों वग़ैरा की रंगत ज़ाहिर हो सकती है तो ऐसी सूरत में क़िब्ले की त़रफ़ मुंह या पीठ मत कीजिये।

बालटी से नहाते वक़्त एह़तियात़ : **अगर** बालटी के ज़रीए ग़ुस्ल करें तो एह़तियात़न उसे तिपाई (STOOL) वग़ैरा पर रख लीजिये ताकि बालटी में छींटें न आएं। नीज़ ग़ुस्ल में इस्ति'माल करने का मग भी फ़र्श पर न रखिये।

सारा गाउं ही दाढ़ी मुन्डा ! : **सुन्नतों** की तरबिय्यत का 30 रोज़ा मदनी क़ाफ़िला सफ़र करता हुवा गाउं की एक **मस्जिद** में पहुंचा, वहां **मुअज़्ज़िन** साह़िब मौजूद न थे लिहाज़ा ख़ुद ही **अज़ान** दी, जब जमाअ़त का वक़्त हुवा तो चन्द नमाज़ी मस्जिद में आए और **मदनी क़ाफ़िले** वालों से कहा कि आप ही नमाज़ भी पढ़ा दीजिये "यहां मस्जिद में **नमाज़ की जमाअ़त** नहीं होती, सब लोग अपनी अपनी नमाज़ पढ़ते हैं क्यूं कि पूरे गाउं में एक भी शख़्स ऐसा नहीं है

www.dawateislami.net

जो **दाढ़ी वाला** हो और इमाम बन सके।"

मस्जिद को आबाद रखना वाजिब है : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! वाक़ेई मक़ामे इब्रत है। दुन्या की **महब्बत** में बड़ी नुहूसत है कि इस की मसरूफ़िय्यत ने मज़्कूरा गाउं के बाशिन्दों को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इबादत से महरूम कर दिया और ख़ानए ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ या'नी मस्जिद वीरान हो गई ! याद रखिये ! मस्जिद को आबाद रखना महल्ले के मुसल्मानों पर वाजिब है चुनान्चे **फ़तावा रज़विय्या शरीफ़** में साबिक़ा शराब फ़रोशों की बनाई हुई मस्जिद के बारे में **सुवाल** हुवा जिन्हों ने तौबा करने के बा'द हलाल माल से बनाई थी। इस का **जवाब** देते हुए मेरे आक़ा आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह **इमाम अहमद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن "फ़तावा रज़विय्या" जिल्द 8 सफ़हा 125 पर फ़रमाते हैं : वोह मस्जिद कि उन लोगों ने बा'दे तौबा माले हलाल से बनाई है बेशक मस्जिदे शरई है और उस में नमाज़ फ़क़त हो सकती ही नहीं बल्कि उस के क़ुर्बो जवार वालों अहले महल्ला पर उस का आबाद रखना **वाजिब** है, उस में (पांचों वक़्त) अज़ान व इक़ामत व जमाअ़त व इमामत करना ज़रूर है, अगर ऐसा न करेंगे गुनहगार होंगे और जो उस में नमाज़ से रोकेगा वोह उन सख़्त ज़ालिमों में दाख़िल होगा जिन की निस्बत **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है :

وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنْ مَّنَعَ مَسٰجِدَ اللّٰهِ اَنْ یُّذْكَرَ فِیْهَا اسْمُهٗ وَ سَعٰى فِیْ خَرَابِهَا

(پ۱، البقرة:۱۱٤)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और उस से बढ़ कर ज़ालिम कौन जो **अल्लाह** की मस्जिदों को रोके उन में नामे ख़ुदा लिये जाने से और उन की वीरानी में कोशिश करे।

(फ़तावा रज़विय्या, जि. 8, स. 125)

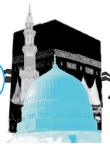

जंगल में मस्जिद : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ज़िम्नन अ़र्ज़ करता चलूं कि जहां मुसल्मान रहते ही न हों ऐसी वीरान व ग़ैर आबाद जगह पर बनाई जाने वाली मस्जिद सिरे से **मस्जिद** के हुक्म में ही नहीं चुनान्चे एक **सुवाल** के जवाब में मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن "फ़तावा रज़विय्या" जिल्द 16 सफ़ह़ा 505 पर फ़रमाते हैं : जब कि येह सह़ीह़ हो कि वोह जगह आबाद नहीं हो सकती और वोह मस्जिद काम में भी न आएगी तो वोह मस्जिद न हुई, उन ईंटों और रुपै को दूसरी मस्जिद में सर्फ़ (या'नी इस्ति'माल) कर सकते हैं, "आ़लमगीरी" में है : "किसी शख़्स ने जंगल या वीराने में मस्जिद बनाई जहां किसी की रिहाइश न हो और लोगों का वहां से गुज़र भी कम हो तो वोह मस्जिद न होगी क्यूं कि उस जगह मस्जिद बनाने की ह़ाजत नहीं है।" (فتاوٰی عالمگیری ج٥ ص٣٢٠)

करे मस्जिदें जो भी आबाद मौला
तू रख उस मुसल्मान को शाद मौला

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

ख़िज़्र व इल्यास عَلَيْهِمَا السَّلَام के बारे में दिलचस्प मा'लूमात :

अ़र्ज़ : ह़ज़रते ख़िज़्र عَلَيْهِ السَّلَام नबी हैं या नहीं ?

इर्शाद : जम्हूर (या'नी अक्सर) का मज़्हब येही है और सह़ीह़ भी येही है कि वोह **नबी** हैं, ज़िन्दा हैं। (عُمْدَةُ الْقَارِي ج٢، ص٨٤، ٨٥)

अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام ज़िन्दा हैं : (आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फिर फ़रमाया) चार नबी ज़िन्दा हैं कि उन को (वफ़ात की सूरत में) वा'दए इलाहिय्यह अभी आया ही नहीं, यूं तो हर नबी ज़िन्दा है (जैसा कि ह़दीसे पाक में

आता है) : اِنَّ اللّٰهَ حَرَّمَ عَلَى الْاَرْضِ اَنْ تَاْكُلَ اَجْسَادَ الْاَنْبِيَاءِ فَنَبِيُّ اللّٰهِ حَيٌّ يُرْزَقُ या'नी बेशक **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) ने ह़राम किया है ज़मीन पर कि अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के जिस्मों को ख़राब करे तो **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के नबी ज़िन्दा हैं रोज़ी दिये जाते हैं। (اِبن ماجه ج۲ص۲۹۱ حدیث۱۶۳۷) अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام पर एक आन को महज़ तस्दीक़े वा'दए इलाहिय्यह के लिये मौत त़ारी होती है बा'द इस के फिर उन को ह़याते ह़क़ीक़ी ह़िस्सी दुन्यवी (या'नी दुन्या जैसी ज़िन्दगी) अ़त़ा होती है। ख़ैर इन चारों में से दो आस्मान पर हैं और दो ज़मीन पर। **ख़िज़्र व इल्यास** عَلَيْهِمَا السَّلَام ज़मीन पर हैं और **इदरीस व ईसा** (عَلَيْهِمَا السَّلَام) आस्मान पर। (تفسیر دُرِّ مَنثور ج۵ ص۴۳۲)

सब को मौत का ज़ाएक़ा चखना है :

अ़र्ज़ : हुज़ूर इन (चारों नबियों) पर मौत त़ारी होगी ?

इर्शाद : ज़रूर होगी। (पारह 4 आले इ़मरान की आयत नम्बर 185 में है :) كُلُّ نَفْسٍ ذَآئِقَةُ الْمَوْتِ ؕ (**तरजमए कन्ज़ुल ईमान :** हर जान को मौत चखनी है) (फिर फ़रमाया) जब येह (या'नी पारह 27 सूरए रह़मान की) आयत (नम्बर 26) नाज़िल हुई। كُلُّ مَنْ عَلَيْهَا فَانٍ ۖ (**तरजमए कन्ज़ुल ईमान :** ज़मीन पर जितने हैं सब को फ़ना है) फ़िरिश्ते ख़ुश हुए कि हम बचे कि हम ज़मीन पर नहीं, जब दूसरी (या'नी पारह 4 आले इ़मरान की) आयत (नम्बर 185) नाज़िल हुई : كُلُّ نَفْسٍ ذَآئِقَةُ الْمَوْتِ ؕ (**तरजमए कन्ज़ुल ईमान :** हर जान को मौत चखनी है) मलाएका ने कहा : अब हम भी गए। (या'नी हमें भी मौत आएगी)

(رُوحُ البَیان ج۹ص۲۹۷،۲۹۸ मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत, स. 483, 485)

अम्बिया को भी अजल आनी है मगर ऐसी कि फ़क़त़ आनी है
फिर उसी आन के बा'द इन की ह़याते मिस्ले साबिक़ वोही जिस्मानी है

www.dawateislami.net

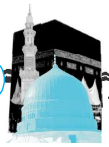

रूह तो सब की है ज़िन्दा उन का
जिस्मे पुरनूर भी रूहानी है

(हदाइक़े बख़्शिश शरीफ़)

शर्हे कलामे रज़ा : सरकारे आ'ला हज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के मज़्कूरा अश्आ़र का ख़ुलासा येह है कि पारह 4 **सूरए आले इमरान** आयत नम्बर 185 में वारिद शुदा रब्बुल अनाम عَزَّوَجَلَّ के इर्शादे गिरामी "كُلُّ نَفْسٍ ذَآئِقَةُ الْمَوْتِ" **तरजमए कन्ज़ुल ईमान :** हर जान को मौत चखनी है।" के मुताबिक़ अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام पर मौत तारी होती है मगर सिर्फ़ एक आन या'नी लम्हे भर के लिये फिर पहले ही की तरह रूह लौटा दी जाती है। हर इन्सान की रूह ज़िन्दा रहती है मगर अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के मुबारक जिस्म भी सलामत रहते हैं : हदीसे पाक में है : اَلْاَنْبِيَاءُ اَحْيَاءٌ فِيْ قُبُوْرِهِمْ يُصَلُّوْنَ या'नी अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام अपनी क़ब्रों में ज़िन्दा हैं और नमाज़ भी पढ़ते हैं (ابو یعلی ج۳ ص۲۱۶ حدیث ۳۴۱۲) एक और हदीसे पाक में है : "बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ज़मीन पर हराम फ़रमा दिया है कि वोह अम्बियाए किराम के बदन खाए। **अल्लाह** के नबी ज़िन्दा हैं और उन को रोज़ी दी जाती है।" (ابن ماجه ج۲ص۲۹۱ حدیث۱۶۳۷) हर नबी ज़िन्दा है जब हर नबी ज़िन्दा है तो फिर मेरे प्यारे प्यारे आक़ा, मक्की मदनी मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم क्यूं ज़िन्दा न होंगे ! और आ़शिक़े रसूल आ'ला हज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه बारगाहे रिसालत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में झूम झूम कर क्यूं न अ़र्ज़ करें :

तू ज़िन्दा है वल्लाह तू ज़िन्दा है वल्लाह
मेरे चश्मे आ़लम से छुप जाने वाले

(हदाइक़े बख़्शिश शरीफ़)

शर्हे कलामे रज़ा : दुन्यवी और ज़ाहिरी आंखों से ऐ मेरे छुप जाने वाले

और मुझे ब ज़ाहिर नज़र न आने वाले ! ख़ुदा की क़सम ! आप ज़िन्दा हैं, **अल्लाह** पाक की क़सम आप ज़िन्दा हैं।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

नेकी की दा'वत देने वाले की ता'रीफ़

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का क़ुरआने मजीद में फ़रमाने आ़लीशान है :

وَمَنْ اَحْسَنُ قَوْلًا مِّمَّنْ دَعَاۤ اِلَى اللّٰهِ وَعَمِلَ صَالِحًا وَّقَالَ اِنَّنِیْ مِنَ الْمُسْلِمِیْنَ ۝ (پ٢٤ حٰم السّجدة ٣٣)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और उस से ज़ियादा किस की बात अच्छी जो **अल्लाह** की त़रफ़ बुलाए और नेकी करे और कहे मैं मुसल्मान हूं।

इस आयते मुबारका के तह़्त सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِى लिखते हैं : ह़ज़रते आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا ने फ़रमाया कि मेरे नज़्दीक येह आयत **मुअज़्ज़िनों** के ह़क़ में नाज़िल हुई और एक क़ौल येह भी है कि जो कोई किसी त़रीक़े पर भी **अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ दा'वत दे वोह (या'नी हर नेकी की दा'वत देने वाला) इस में दाख़िल है।

जो नेकी की दा'वत की धूमें मचाए
मैं देता हूं उस को दुआ़ए मदीना

(वसाइले बख़्शिश, स. 152)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

बेहतरीन आदमी की ख़ुसूसिय्यात : **साह़िबे** क़ुरआने मुबीन, **मह़बूबे रब्बुल आ़लमीन,** जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم एक मर्तबा मिम्बरे

अक़्दस पर जल्वा फ़रमा थे कि एक सहाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अ़र्ज़ की : "**या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم लोगों में सब से अच्छा कौन है ?" फ़रमाया : लोगों में से वोह शख़्स सब से अच्छा है जो कसरत से क़ुरआने करीम की तिलावत करे, ज़ियादा मुत्तक़ी हो, **सब से ज़ियादा नेकी का हुक्म देने और बुराई से मन्अ़ करने वाला हो** और सब से ज़ियादा सिलए रेह़मी (या'नी रिश्तेदारों के साथ अच्छा बरताव) करने वाला हो। **(مُسندِ امام احمد ج١٠ص٤٠٢حديث٢٧٥٠٤)**

तिलावत, परहेज़ गारी, नेकी की दा'वत और सिलए रेह़मी :

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ख़ूब सवाब लूटने की निय्यत से बयान कर्दा ह़दीसे मुबारका की रोशनी में कुछ "नेकी की दा'वत" पेश करने की सआ़दत ह़ासिल करता हूं। इस रिवायत में सब से **अच्छे आदमी** की चार ख़ुसूसिय्यात बयान की गई हैं : (1) ब करसत तिलावत (2) ख़ूब परहेज़ गारी (3) सब से ज़ियादा नेकी की दा'वत देना और बुराई से मुमानअ़त करना और (4) रिश्तेदारों से हुस्ने सुलूक। वाक़ेई येह चारों निहायत ही उ़म्दा सिफ़ात हैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ नसीब करे। आमीन। इन चारों के फ़ज़ाइल मुलाहज़ा हों ﴿1﴾ ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि नबिय्ये मुकर्रम, **नूरे मुजस्सम**, रसूले अकरम, शहन्शाहे आदम व बनी आदम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : क़ियामत के दिन क़ुरआन पढ़ने वाला आएगा तो क़ुरआन अ़र्ज़ करेगा : **या रब** عَزَّوَجَلَّ ! इसे हुल्ला (या'नी जन्नत का लिबास) पहना। तो उसे **करामत का हुल्ला** (या'नी बुज़ुर्गी का जन्नती लिबास) पहनाया जाएगा। फिर क़ुरआन अ़र्ज़ करेगा : "**या रब** عَزَّوَجَلَّ ! इस में इज़ाफ़ा फ़रमा," तो उसे **करामत का ताज** पहनाया जाएगा, फिर क़ुरआन

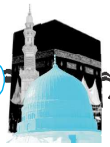

अ़र्ज़ करेगा : "**या रब** عَزَّوَجَلَّ ! इस से **राज़ी** हो जा।" तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस से राज़ी हो जाएगा। फिर इस कुरआन पढ़ने वाले से कहा जाएगा : कुरआन पढ़ता जा और जन्नत के दरजात तै़ करता जा और हर आयत पर उसे एक ने'मत अ़ता की जाएगी। (ترمذی ج٤ ص٤١٩ حدیث ٢٩٢٤) ﴾2﴿ परहेज़ गारों को आख़िरत में काम्याबी की नवीद (या'नी ख़ुश ख़बरी) सुनाई गई है चुनान्चे पारह 25 **सूरतुज़्ज़ुख़रुफ़** आयत नम्बर 35 में इर्शाद होता है : وَالْاٰخِرَةُ عِنْدَ رَبِّكَ لِلْمُتَّقِيْنَ ﴿﴾ तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और आख़िरत तुम्हारे रब के पास परहेज़ गारों के लिये है। (پ٢٥، الزخرف:٣٥)

﴾3﴿ ह़ज़रते सय्यिदुना **का'बुल अह़बार** رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ का इर्शाद है : "**जन्नतुल फ़िरदौस** ख़ास उस शख़्स के लिये है जो اَمْرٌ بِالْمَعْرُوْف وَنَهْیٌ عَنِ الْمُنْكَر करे।" (या'नी नेकी का हुक्म दे और बुराई से मन्अ़ करे) (تَنبِيهُ الْمُغتَرِّين ص ٢٣٦) ﴾4﴿ फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم है : जिसे येह पसन्द हो कि उस की उ़म्र और रिज़्क़ में इज़ाफ़ा कर दिया जाए तो उसे चाहिये कि अपने वालिदैन के साथ अच्छा बरताव करे और अपने रिश्तेदारों के साथ सिलए रेह़्मी किया करे। (اَلتَّرغِيب وَالتَّرهِيب ج٣ ص ٢١٧ حديث١٦)

उ़म्र व रिज़्क़ में ज़ियादती के मा'ना : दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक्तबतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 1197 सफ़्ह़ात पर मुश्तमिल किताब, "बहारे शरीअ़त" जिल्द 3 सफ़्ह़ा 560 पर **सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्तरीक़ह** ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : ह़दीस में आया है कि "सिलए रेह़्म से उ़म्र ज़ियादा होती है और रिज़्क़ में वुस्अ़त (या'नी ज़ियादती) होती है।" बा'ज़ उ़लमा ने इस ह़दीस को ज़ाहिर पर ह़म्ल किया है (या'नी ह़दीस के ज़ाहिरी मा'ना ही मुराद हैं) या'नी यहां क़ज़ा

मुअ़ल्लक़ मुराद है क्यूं कि क़ज़ा मुबरम टल नहीं सकती।[1]

اِذَا جَآءَ اَجَلُهُمْ فَلَا يَسْتَاْخِرُوْنَ سَاعَةً وَّلَا يَسْتَقْدِمُوْنَ ﴿۴۹﴾ (پ۱۱، یونس:۴۹)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : जब उन का वा'दा आएगा तो एक घड़ी न पीछे हटें न आगे बढ़ें।

और बा'ज़ (उ़लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام) ने फ़रमाया कि ज़ियादतिये उ़म्र का येह मत़लब है कि मरने के बा'द भी इस का सवाब लिखा जाता है गोया वोह अब भी ज़िन्दा है या येह मुराद है कि मरने के बा'द भी इस का ज़िक्रे ख़ैर लोगों में बाक़ी रहता है। (رَدُّالْمُحتار ج۹ ص۶۷۸)

हाथों हाथ फूफी से सुल्ह़ कर ली : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !

आज कल बात बात पर लोग रिश्तेदारियां काट कर रख देते हैं, लिहाज़ा आपस में **महब्बत** की फ़ज़ा क़ाइम होने की ख़्वाहिश की अच्छी निय्यत के साथ मज़ीद सवाब कमाने के लिये रिश्तेदारों के साथ हुस्ने सुलूक के ज़िम्न में नेकी की दा'वत पेश करते हुए मज़ीद **मदनी फूल** पेश करने की सअ़ी करता हूं : ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ एक मर्तबा **सरकारे मदीना** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की अह़ादीसे मुबारका बयान फ़रमा रहे थे, इस दौरान फ़रमाया : हर क़ातेए रेह़म (या'नी रिश्तेदारी तोड़ने वाला) हमारी मह़फ़िल से उठ जाए। एक नौ जवान उठ कर अपनी फूफी के हां गया जिस से उस का कई साल पुराना झगड़ा था, जब दोनों एक दूसरे से राज़ी हो गए तो उस नौ जवान से फूफी ने कहा : तुम जा कर इस का सबब पूछो, आख़िर ऐसा क्यूं हुवा ? (या'नी सय्यिदुना अबू

1 : क़ज़ा से मुराद यहां क़िस्मत है। क़ज़ा की अक़्साम और इस के बारे में तफ़्सीलात जानने के लिये मक्तबतुल मदीना की मत़्बूआ़ बहारे शरीअ़त जिल्द अव्वल सफ़ह़ा 14 ता 17 का मुत़ालआ़ कीजिये, ख़ुसूसन मजलिस, अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या की त़रफ़ से दिये गए ह़वाशी बे मिसाल और मुतअ़द्दिद वसाविस का इ़लाज हैं।

www.dawateislami.net

हुरैरा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ के ए'लान की क्या हिक्मत है ?) नौ जवान ने हाज़िर हो कर जब पूछा तो हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने फ़रमाया कि मैं ने **हुज़ूरे अन्वर** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم से येह सुना है : "जिस क़ौम में क़ातेए रेहम (या'नी रिश्तेदारी तोड़ने वाला) हो, उस (क़ौम) पर **अल्लाह** की रहमत का नुज़ूल नहीं होता।" (اَلزَّواجِرُ عَنِ اقْتِرافِ الْكَبائِر ج۲ ص۱۵۳)

सास बहू में सुल्ह़ का राज़ : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! पहले के मुसल्मान किस क़दर ख़ौफ़े ख़ुदा रखने वाले हुवा करते थे ! ख़ुश नसीब नौ जवान ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के डर के सबब फ़ौरन अपनी फूफी के पास ख़ुद हाज़िर हो कर सुल्ह़ की तरकीब कर ली। सभी को चाहिये कि ग़ौर करें कि ख़ानदान में किस किस से अनबन है जब मा'लूम हो जाए तो अब अगर शरई उ़ज़्र न हो तो फ़ौरन नाराज़ रिश्तेदारों से "सुल्ह़ो सफ़ाई" की तरकीब शुरूअ़ कर दें। अगर झुकना भी पड़े तो बेशक रिज़ाए इलाही के लिये झुक जाएं। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ सर बुलन्दी पाएंगे। **फ़रमाने मुस्तफ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم है : مَنْ تَوَاضَعَ لِلّٰهِ رَفَعَهُ اللّٰه या'नी जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये आजिज़ी करता है **अल्लाह** तआ़ला उसे बुलन्दी अ़ता फ़रमाता है। (شُعَبُ الْاِیمان ج۶ ص۲۷۶ حدیث۸۱۴۰) अपने घरों और मुआ़शरे को **अम्न का गहवारा** बनाने के लिये दा'वते इस्लामी के मुश्कबार मदनी माह़ोल से वाबस्ता हो जाइये, और हर माह कम अज़ कम तीन दिन के लिये **मदनी क़ाफ़िले** में सुन्नतों भरा सफ़र कीजिये नीज़ **मदनी इन्आ़मात** के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारिये। आप की तरग़ीब व तह़रीस के लिये एक **मदनी बहार** पेश करता हूं, चुनान्चे एक इस्लामी भाई के बयान का ख़ुलासा है कि त़वील अ़र्से से मेरी ज़ौजा और वालिदा या'नी **सास बहू** में ख़ूब ठनी हुई थी, नतीजतन ज़ौजा

www.dawateislami.net

रूठ कर मयके जा बैठी। मैं सख़्त परेशान था, समझ में नहीं आता था कि इस मस्अले को कैसे **हल** करूं। ऐसे में दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक्तबतुल मदीना** की जारी कर्दा "मदनी मुज़ाकरे" की VCD **"घर अम्न का गहवारा कैसे बने !"** मेरे हाथ आई। मौज़ूअ़ देखा तो बड़ी उम्मीद के साथ येह VCD ख़ुद भी देखी और अपनी वालिदए मोह़तरमा को भी दिखाई और एक VCD अपने सुसराल भी भेज दी। मेरी वालिदा को येह VCD इतनी **पसन्द** आई कि उन्हों ने इसे दो बार देखा और ह़ैरत अंगेज़ त़ौर पर मुझ से फ़रमाने लगीं : **"चल बेटा ! तेरे सुसराल चलते हैं।"** मैं ने सुकून का सांस लिया कि लगता है जो काम मैं भरपूर इन्फ़िरादी कोशिश के बा वुजूद न कर सका वोह इस VCD ने कर दिया। **मेरे** सुसराल पहुंच कर वालिदा साह़िबा ने बड़ी **मह़ब्बत** से मेरी ज़ौजा को **मनाया** और उसे वापस घर ले आईं। दूसरी जानिब मेरी ज़ौजा ने भी **मुस्बत त़र्ज़े अ़मल** का मुज़ाहरा किया और घर पहुंचने के बा'द दूसरे ही दिन अपनी सास (या'नी मेरी वालिदा) से कहने लगीं : अम्मीजान ! मेरा कमरा बहुत बड़ा है, जब कि दीगर घर वाले जिस कमरे में रहते हैं वोह क़दरे छोटा है, आप मेरा कमरा ले लीजिये और मैं उस छोटे कमरे में रिहाइश इख़्तियार कर लेती हूं। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ हमारा घर जो फ़ितने और फ़साद का शिकार था, दा'वते इस्लामी की बरकत से **अम्न का गहवारा** बन गया। (मदनी मुज़ाकरे की मज़्कूरा VCD "घर अम्न का गहवारा कैसे बने" **मक्तबतुल मदीना** से हदिय्यतन ली जा सकती और दा'वते इस्लामी की वेब साइट www.dawateislamihind.net पर देखी और सुनी जा सकती है।)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

ख़ारिश का इलाज

(अज़ : अमीरे अहले सुन्नत, हज़रते अल्लामा मौलाना
मुहम्मद इल्यास अत्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه)

रोज़ाना नहाना सिह्हत के लिये मुफ़ीद है और अगर आप को ख़ारिश है तो रोज़ाना कोई सा साबुन अच्छी त़रह लगा कर नहाइये और अगर सूखी ख़ारिश हो तो ख़ूब मल कर बल्कि बाज़ार से नहाने के इस्ति'माल का लम्बे हेन्डल वाला प्लास्टिक का ब्रश ख़रीद कर उस से अच्छी त़रह रगड़ कर ग़ुस्ल कीजिये। जो कपड़े उतारे हैं वोह धूप में डाल दीजिये ताकि जरासीम मर जाएं। दूसरे दिन नहा कर पहले दिन जो उतारे थे वोह पहन लीजिये और आज जो उतारे हैं वोह धूप में डाल दीजिये। येह अ़मल रोज़ाना जारी रखिये اِنْ شَآءَ اللّٰه ख़ारिश में काफ़ी राह़त महसूस करेंगे, अगर धूप में डालना मुम्किन न हो तो किसी भी मुनासिब जगह पर रस्सी वग़ैरा पर डाल दीजिये मगर धूप ज़ियादा मुफ़ीद है। (मेडीकल स्टोर से ख़ारिश में इस्ति'माल के ख़ुसूसी साबुन भी मिल सकते हैं)

(घरेलू इलाज, स 40)

M.R.P. ₹ 00/-

Maktabatul Madina
Mohammad Ali Road, Mandvi Post Office, Mumbai 9022177997, 9320558372
Faizane Madina, Teen Koniya Bagicha, Mirzapur, Ahmedabad 9327168200
421, Urdu Market, Matia Mahal, Near: Noor Guest House, Jama Masjid, Delhi
011-23284560, 8178862570 For Home Delivery: 9978626025*T&C Apply
feedbacknmhind@gmail.com www.dawateislamihind.net